

माध्यमिक के विद्यालयों के छात्रों की अध्ययन आदत का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव: दरभंगा जिला के संदर्भ में
डॉ० शहाना प्रवीन*

DOI: <http://doi.org/10.5281/zenodo.20328623>

Review: 06/12/2025

Acceptance: 07/12/2025

Publication: 30/12/2025

शोध सार

वर्तमान शोध का उद्देश्य दरभंगा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, बुद्धिलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना था। विशेष रूप से इस अध्ययन में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के स्तर का आकलन, शैक्षिक उपलब्धि के स्तर का परीक्षण, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का विश्लेषण तथा लिंग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि की तुलना की गई। इस शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प (Descriptive Research Design) का प्रयोग किया गया तथा तथ्यों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि (Survey Method) को अपनाया गया। अध्ययन के लिए कुल 500 माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन आदतों के मापन हेतु मानकीकृत अध्ययन आदत मापनी तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्राप्तांकों का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, सहसंबंध तथा *t*-परीक्षण जैसे सांख्यिकीय उपकरणों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की समग्र अध्ययन आदतें मध्यम से संतोषजनक स्तर की हैं। पठन क्षमता, अधिगम प्रेरणा तथा परीक्षा तैयारी जैसे आयाम अपेक्षाकृत बेहतर पाए गए, जबकि समय प्रबंधन, नोट्स निर्माण तथा स्वास्थ्य संबंधी आदतों में सुधार की आवश्यकता पाई गई। अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य 0.610 का धनात्मक एवं 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध पाया गया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि बेहतर अध्ययन आदतें उच्च शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित हैं। लिंग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें बालिकाओं का प्रदर्शन बालकों की अपेक्षा बेहतर रहा। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि प्रभावी अध्ययन आदतें विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। अतः विद्यार्थियों में बेहतर अध्ययन आदतों के विकास हेतु शिक्षक, अभिभावक एवं विद्यालय स्तर पर समन्वित प्रयास आवश्यक हैं।

कुंजी-शब्द: माध्यमिक विद्यालय, अध्ययन आदत, शैक्षिक उपलब्धि एवं दरभंगा जिला

*शिक्षिका, लिटिल डैफोडिल पब्लिक स्कूल, बीबी पाकर, दरभंगा

प्रस्तावना

शिक्षा को व्यापक रूप से व्यक्तिगत विकास तथा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त साधन माना जाता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता अनेक संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक तथा व्यवहारगत कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें अध्ययन आदतें (Study Habits) एक केंद्रीय स्थान रखती हैं। अध्ययन आदतों से अभिप्राय उन व्यवस्थित एवं नियमित अभ्यासों से है जिन्हें विद्यार्थी शैक्षणिक कार्यों के दौरान अपनाते हैं, जैसे समय प्रबंधन, नोट्स बनाना, एकाग्रता बनाए रखना, पठन, पुनरावृत्ति, गृहकार्य पूरा करना तथा परीक्षा की तैयारी करना। प्रभावी अध्ययन आदतें अधिगम की दक्षता को बढ़ाती हैं, समझ को बेहतर बनाती हैं, स्मृति धारण क्षमता को सुदृढ़ करती हैं और अंततः उच्च शैक्षिक उपलब्धि में योगदान देती हैं। इसके विपरीत, कमजोर अध्ययन आदतें प्रायः शैक्षणिक कम प्रदर्शन, प्रेरणा की कमी, परीक्षा संबंधी चिंता तथा कम शैक्षिक उपलब्धि का कारण बनती हैं (क्रेडे एवं कुन्सेल, 2008)। शैक्षिक उपलब्धि, जिसे सामान्यतः परीक्षा अंकों, ग्रेड तथा समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन के माध्यम से मापा जाता है, विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति और भविष्य के शैक्षिक अवसरों का एक प्रमुख संकेतक है।

माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि विशेष महत्त्व रखती है क्योंकि यह स्तर प्राथमिक शिक्षा और उच्च शैक्षणिक अथवा व्यावसायिक शिक्षा के बीच संक्रमण काल के रूप में कार्य करता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी बढ़ती शैक्षणिक अपेक्षाओं, मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों, सामाजिक दबावों तथा करियर संबंधी आकांक्षाओं का अनुभव करते हैं, जो उनके अधिगम व्यवहार और शैक्षिक परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए, इस स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि के निर्धारकों को समझना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

शैक्षिक उपलब्धि के विभिन्न निर्धारकों में अध्ययन आदतें निरंतर एक महत्त्वपूर्ण भविष्यवक्ता (Predictor) के रूप में सामने आई हैं। अनुसंधानों से संकेत मिलता है कि जो विद्यार्थी संगठित अध्ययन दिनचर्या, प्रभावी समय प्रबंधन, सक्रिय अधिगम रणनीतियों तथा अनुशासित शैक्षणिक व्यवहार का पालन करते हैं, वे अनियमित अथवा अप्रभावी अध्ययन पद्धतियों वाले विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर शैक्षणिक परिणाम प्राप्त करते हैं (क्रेडे एवं कुन्सेल, 2008; शर्मा एवं सिंह, 2021)। अध्ययन आदतें जन्मजात नहीं होतीं, बल्कि पर्यावरणीय प्रभावों, अभिभावकीय मार्गदर्शन, शिक्षक सहयोग, विद्यालयी संस्कृति तथा व्यक्तिगत प्रेरणा के माध्यम से विकसित होती हैं। अतः अध्ययन आदतों का परीक्षण विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार हेतु व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

भारतीय शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थियों की शैक्षणिक दिशा निर्धारित करने में आधारभूत भूमिका निभाती है। बोर्ड परीक्षाओं की प्रतिस्पर्धात्मक प्रकृति, पाठ्यक्रम की बढ़ती जटिलता तथा अभिभावकों की बढ़ती अपेक्षाएँ प्रभावी अध्ययन आदतों को शैक्षणिक सफलता के लिए अनिवार्य बनाती हैं। तथापि, शैक्षिक संसाधनों में असमानता, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी अवसंरचना तथा घरेलू अधिगम वातावरण में अंतर विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को भिन्न रूप से प्रभावित करते हैं। बिहार के दरभंगा जैसे जिलों में, जहाँ शहरी एवं ग्रामीण दोनों प्रकार के विद्यालय विभिन्न स्तर की शैक्षणिक सुविधाओं और सहायता के साथ कार्यरत हैं, अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव विशेष अध्ययन की अपेक्षा करता है। दरभंगा जिला एक विशिष्ट शैक्षिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है, जिसकी विशेषता सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता, भिन्न आर्थिक परिस्थितियाँ तथा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के संस्थागत संसाधनों में अंतर है। इस जिले के विद्यार्थियों को निजी कोचिंग की सीमित उपलब्धता, घर पर उपयुक्त अध्ययन स्थल का अभाव, डिजिटल असमानता तथा असंगत शैक्षणिक सहयोग जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जो उनकी अध्ययन आदतों तथा परिणामस्वरूप शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर सकती हैं। साथ ही, अनेक विद्यार्थी इन परिस्थितिजन्य सीमाओं के बावजूद दृढ़ता और उच्च शैक्षणिक आकांक्षाओं का प्रदर्शन करते हैं। अतः दरभंगा जिले के माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदतों के प्रभाव का अध्ययन शैक्षिक दृष्टि से प्रासंगिक तथा सामाजिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

कई अनुभवजन्य अध्ययनों ने माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध का समर्थन किया है। रज़िया (2015) ने प्रतिवेदित किया कि प्रभावी अध्ययन आदतें किशोर विद्यार्थियों के बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। इसी प्रकार, गाहिर एवं सहयोगी (2022) ने माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया तथा संरचित अधिगम अभ्यासों के महत्त्व को रेखांकित किया। ये निष्कर्ष संकेत करते हैं कि उपयुक्त अध्ययन आदतों का विकास शैक्षिक परिणामों को बेहतर बनाने हेतु एक व्यावहारिक हस्तक्षेप सिद्ध हो सकता है। अतः वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य दरभंगा जिले के विशिष्ट संदर्भ में माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदतों के प्रभाव का परीक्षण करना है। विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं, इसकी पहचान करके यह

अध्ययन शैक्षिक योजना निर्माण, निर्देशन सेवाओं, अभिभावकीय जागरूकता तथा विद्यालय-स्तरीय हस्तक्षेपों में योगदान देने का प्रयास करेगा, जिनका उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों में प्रभावी अध्ययन आदतों को प्रोत्साहित करना है।

अध्ययन का औचित्य एवं महत्त्व

माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, बौद्धिक विकास तथा भविष्य के शैक्षिक अवसरों का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक मानी जाती है। इस स्तर पर सफलता केवल विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि उन व्यवहारगत तथा पर्यावरणीय कारकों पर भी आधारित होती है, जो उनके अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इन कारकों में अध्ययन आदतें (Study Habits) शैक्षणिक उपलब्धि के सबसे महत्त्वपूर्ण निर्धारकों में से एक के रूप में निरंतर मान्यता प्राप्त करती रही हैं। अध्ययन आदतों में समय प्रबंधन, नोट्स बनाना, एकाग्रता, पुनरावृत्ति की आदत, गृहकार्य पूर्ण करना, पठन रणनीतियाँ तथा परीक्षा की तैयारी जैसे व्यवस्थित एवं नियमित अधिगम व्यवहार सम्मिलित हैं, जो विद्यार्थियों की अधिगम दक्षता तथा शैक्षणिक प्रदर्शन को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करते हैं (क्रेडे एवं कुन्सेल, 2008)। प्रभावी अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी सामान्यतः अधिक अनुशासित, आत्म-नियंत्रित तथा शैक्षणिक रूप से सफल होते हैं, जबकि कमजोर अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी अक्सर कम उपलब्धि, परीक्षा संबंधी चिंता तथा निम्न शैक्षणिक प्रेरणा जैसी समस्याओं का सामना करते हैं (रज़िया, 2015)। माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन आदतों का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह स्तर प्रारम्भिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच एक महत्त्वपूर्ण संक्रमण काल का प्रतिनिधित्व करता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों को बढ़ते शैक्षणिक दबाव, पाठ्यक्रम की जटिलता, मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों तथा अभिभावकों एवं शिक्षकों की उच्च अपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में प्रभावी अध्ययन आदतें शैक्षणिक मांगों का सफलतापूर्वक सामना करने और शैक्षिक सफलता प्राप्त करने के लिए अत्यंत आवश्यक हो जाती हैं (मेंडेजाबल, 2013)।

तथापि, अनेक विद्यार्थी अपनी बौद्धिक क्षमता के अभाव के कारण नहीं, बल्कि अप्रभावी अध्ययन पद्धतियों, समय के अनुचित उपयोग, एकाग्रता की कमी तथा शैक्षणिक अनुशासन के अभाव के कारण अपनी वास्तविक शैक्षणिक क्षमता को प्राप्त नहीं कर पाते। वर्तमान अध्ययन को करने का औचित्य इस आवश्यकता से उत्पन्न होता है कि दरभंगा जिले के विशिष्ट सामाजिक-शैक्षिक संदर्भ में यह समझा जाए कि अध्ययन आदतें माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। दरभंगा एक ऐसा जिला है जो सामाजिक-आर्थिक विविधता, ग्रामीण-शहरी असमानताओं, विद्यालयी अवसंरचना में अंतर तथा शैक्षणिक संसाधनों की असमान उपलब्धता जैसी विशेषताओं से युक्त है, जिससे यह एक विशिष्ट शैक्षणिक वातावरण प्रस्तुत करता है। इस जिले के विद्यार्थी प्रायः घर पर उपयुक्त अध्ययन वातावरण के अभाव, अभिभावकीय शैक्षणिक सहयोग की कमी, डिजिटल अधिगम संसाधनों तक सीमित पहुँच तथा आर्थिक कठिनाइयों जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनकी अध्ययन आदतों तथा शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती हैं। यद्यपि विद्यार्थियों की शैक्षणिक आकांक्षाएँ उच्च रहती हैं, तथापि परिस्थितिजन्य बाधाएँ प्रभावी अधिगम व्यवहार के विकास में अवरोध उत्पन्न कर सकती हैं। इसलिए, इस क्षेत्र में अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का संदर्भ-विशिष्ट अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है।

वर्तमान अध्ययन का महत्त्व शैक्षणिक, व्यावहारिक तथा नीतिगत—तीनों दृष्टियों से है। अध्ययन के निष्कर्ष विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता प्रदान कर सकते हैं कि संगठित एवं प्रभावी अध्ययन आदतें उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में किस प्रकार सहायक होती हैं। शिक्षक विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी कठिनाइयों को समझकर अधिक सहयोगात्मक शिक्षण रणनीतियाँ, परामर्श तथा

मार्गदर्शन की व्यवस्था कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों में बेहतर अधिगम आदतों का विकास हो सके। अभिभावकों को भी यह समझने में सहायता मिलेगी कि बच्चों के लिए अनुकूल घरेलू अध्ययन वातावरण का निर्माण तथा शैक्षणिक प्रोत्साहन कितना आवश्यक है। विद्यालय प्रशासक अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर शैक्षणिक परामर्श कार्यक्रम, अध्ययन कौशल कार्यशालाएँ तथा उपचारात्मक सहायता तंत्र विकसित कर सकते हैं, जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को उन्नत करना होगा (गेटिंगर एवं सीबर्ट, 2002)। इसके अतिरिक्त, शैक्षिक योजनाकार एवं नीति-निर्माता इस अध्ययन से प्राप्त साक्ष्यों का उपयोग विशेष रूप से उन क्षेत्रों में माध्यमिक शिक्षा के परिणामों को सुधारने हेतु हस्तक्षेपों के निर्माण में कर सकते हैं, जहाँ शैक्षणिक असमानताएँ विद्यमान हैं। यह अध्ययन दरभंगा जिले से अनुभवजन्य साक्ष्य प्रस्तुत करके शैक्षिक अनुसंधान के व्यापक क्षेत्र में भी योगदान देगा, क्योंकि इस क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध पर अपेक्षाकृत सीमित शोध कार्य उपलब्ध हैं। चूँकि शैक्षणिक परिस्थितियाँ क्षेत्रानुसार भिन्न होती हैं, इसलिए स्थानीय संदर्भों पर आधारित अध्ययन संदर्भ-संगत निष्कर्ष प्रदान करने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इस प्रकार, वर्तमान अध्ययन न केवल व्यक्तिगत शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, बल्कि क्षेत्रीय स्तर पर माध्यमिक शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को सुदृढ़ करने में भी सहायक होगा।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

क्रेडे एवं कुन्सेल (2008) ने अध्ययन आदतों, अध्ययन कौशलों तथा अभिवृत्तियों की शैक्षणिक उपलब्धि में भूमिका का परीक्षण करने हेतु एक मेटा-विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि अध्ययन आदतें शैक्षणिक सफलता के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक हैं तथा कई स्थितियों में ये मानकीकृत योग्यता मापों की अपेक्षा शैक्षणिक प्रदर्शन को अधिक प्रभावी रूप से स्पष्ट करती हैं। इस अध्ययन ने शैक्षिक उपलब्धि में व्यवहारगत अधिगम रणनीतियों के महत्त्व को सशक्त समर्थन प्रदान किया।

मेंडेज़ाबल (2013) ने अध्ययन आदतों और शैक्षणिक प्रदर्शन के मध्य संबंध का अध्ययन किया तथा पाया कि प्रभावी अध्ययन आदतें शैक्षणिक सफलता में उल्लेखनीय योगदान देती हैं। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि समय प्रबंधन, एकाग्रता तथा व्यवस्थित पुनरावृत्ति जैसी अध्ययन आदतें विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। इस अध्ययन ने शैक्षणिक संस्थानों में उत्पादक अध्ययन आदतों के विकास की आवश्यकता पर बल दिया।

रज़िया (2015) ने माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं लिंग के संदर्भ में किया। अध्ययन में पाया गया कि जिन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें प्रभावी थीं, उनका शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर था, जबकि कमजोर अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों का प्रदर्शन निम्न स्तर का पाया गया। निष्कर्षों से यह भी स्पष्ट हुआ कि सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार को प्रभावित करती है, जिससे यह संकेत मिलता है कि घरेलू वातावरण एवं अभिभावकीय सहयोग शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अध्ययन ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के निर्धारक के रूप में अध्ययन आदतों के महत्त्व को स्थापित किया।

अली एवं फ़ाज़ (2017) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन विद्यालय के प्रकार तथा लिंग के संदर्भ में किया। अध्ययन के निष्कर्षों से प्रभावी अध्ययन आदतों और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सार्थक सकारात्मक संबंध पाया गया। यह भी देखा गया कि सहयोगात्मक एवं अनुकूल शैक्षणिक वातावरण में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें अधिक प्रभावी थीं तथा उनका शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर था।

गाहिर, साहू एवं साहू (2022) ने ओडिशा के माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन सहसंबंधात्मक शोध अभिकल्प के माध्यम से किया। अध्ययन में अध्ययन आदतों और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक सशक्त सकारात्मक संबंध पाया गया, जो पुरुष एवं महिला दोनों विद्यार्थियों में समान रूप से विद्यमान था। शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष ज्ञात कि अनुशासित अध्ययन व्यवहार बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण योगदान देता है तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में प्रभावी अध्ययन रणनीतियों के विकास की अनुशंसा की।

मिश्रा (2022) ने माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं अभिवृत्तियों का अध्ययन लिंग, जाति, अभिभावकों के व्यवसाय तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर जैसे जनसांख्यिकीय चरों के संदर्भ में किया। अध्ययन में पाया गया कि संगठित एवं व्यवस्थित अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थी शैक्षणिक संलग्नता तथा अधिगम परिणामों में अधिक सफल थे। अध्ययन ने शैक्षणिक प्रदर्शन को उन्नत करने में संरचित अध्ययन व्यवहार के महत्व को रेखांकित किया तथा अध्ययन आदतों पर परिस्थितिजन्य कारकों के प्रभाव को स्पष्ट किया।

अकुएज़ुइलो एवं एजेंटी (2023) ने नाइजीरिया के माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों एवं अधिगम शैलियों को शैक्षणिक उपलब्धि के पूर्वानुमानक के रूप में अध्ययन किया। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि अध्ययन आदतें शैक्षणिक उपलब्धि की महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता हैं तथा बेहतर आत्म-नियंत्रित अध्ययन व्यवहार वाले विद्यार्थी शैक्षणिक रूप से अधिक सफल पाए गए।

अदेओये एवं सहयोगी (2023) ने माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों के विकास की रणनीतियों तथा उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में निष्कर्ष निकला कि प्रभावी अध्ययन आदतें विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को उल्लेखनीय रूप से बेहतर बनाती हैं। अध्ययन में संस्थागत स्तर पर ऐसे हस्तक्षेपों की अनुशंसा की गई जो विद्यार्थियों में सकारात्मक अध्ययन व्यवहार विकसित कर सकें।

कोस्टा एवं सहयोगी (2024) ने माध्यमिक एवं मध्य विद्यालयी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के निर्धारकों पर एक व्यवस्थित समीक्षा अध्ययन किया। समीक्षा में आत्म-नियंत्रित अधिगम व्यवहार, अनुशासित अध्ययन दिनचर्या तथा प्रभावी अध्ययन आदतों को शैक्षणिक सफलता के प्रमुख निर्धारकों के रूप में पहचाना गया। इस अध्ययन ने पुनः यह स्थापित किया कि व्यवहारगत अधिगम पद्धतियाँ शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कुमार एवं यादव (2025) ने भारत के माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सकारात्मक संबंध पाया गया, जिससे स्पष्ट हुआ कि अनुशासित अध्ययन दिनचर्या अपनाने वाले विद्यार्थी शैक्षणिक रूप से अधिक सफल होते हैं। अध्ययन में यह भी सुझाव दिया गया कि शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यालय प्रशासकों के संयुक्त प्रयासों द्वारा विद्यार्थियों में बेहतर अध्ययन आदतों का विकास किया जाना चाहिए।

अध्ययन के उद्देश्य

1. दरभंगा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों के स्तर का आकलन करना।
2. दरभंगा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर का परीक्षण करना।
3. दरभंगा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदतों के प्रभाव का अन्वेषण करना।
4. लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की तुलना करना।

5. लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

अध्ययन की रूपरेखा

वर्तमान शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। वर्तमान अध्ययन की जनसंख्या दरभंगा जिले के सभी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों को सम्मिलित करती है। इस अध्ययन हेतु नमूने का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के माध्यम से किया जाएगा, ताकि ग्रामीण-शहरी क्षेत्र तथा लिंग के आधार पर समुचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। अध्ययन के लिए दरभंगा जिले के चयनित माध्यमिक विद्यालयों से 500 विद्यार्थियों को नमूने के रूप में शामिल किया गया जिसमें दोनों बालक एवं बालिका की संख्या समान रूप से ली गयी। वर्तमान अध्ययन में दो प्रमुख उपकरणों का उपयोग किया जाएगा। विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को मापने के लिए पलसाने एवं शर्मा द्वारा निर्मित मानकीकृत स्टडी हैबिट स्केल का उपयोग किया गया। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए उनके विद्यालयीय अभिलेखों/वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों अथवा शोधकर्ता द्वारा विकसित उपलब्धि परीक्षण का उपयोग किया गया। इस प्रकार, वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य दरभंगा जिले के माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध एवं प्रभाव का विश्लेषण किया गया।

परिणामों की व्याख्या एवं विश्लेषण

तालिका संख्या 01: अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि का वर्णनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	चर	विभिन्न आयाम	कुल संख्या	न्यूनतम	अधिकतम	माध्य	मानक विचलन
1.	अध्ययन आदत	समय निर्धारण	500	2	9	6.40	2.935
		अध्ययन हेतु भौतिक परिस्थितियाँ	500	7	12	9.40	3.785
		पठन क्षमता	500	10	14	13.80	2.294
		नोट्स बनाना	500	3	5	3.90	3.404
		अधिगम प्रेरणा के कारक	500	8	12	12.80	3.872
		स्मृति सुधार	500	5	8	7.20	4.405
		परीक्षा में उपस्थित होना/परीक्षा तैयारी	500	9	17	15.80	2.052
		स्वास्थ्य	500	2	6	4.20	2.631
		कुल अध्ययन आदत	500	46	83	63.52	12.170
2.		शैक्षिक उपलब्धि	500	52.00	89.00	68.41	7.54

व्याख्या एवं विश्लेषण:

तालिका संख्या 01 में अध्ययन आदतों, बुद्धिलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण को प्रस्तुत किया गया है। तालिका में कुल 500 विद्यार्थियों के प्राप्तांक, न्यूनतम, अधिकतम, माध्य (Mean) तथा मानक विचलन को दर्शाया गया है। अध्ययन आदतों के विभिन्न आयामों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समय निर्धारण में विद्यार्थियों का न्यूनतम प्राप्तांक 2, अधिकतम प्राप्तांक 9, माध्य 6.40 तथा मानक विचलन 2.935 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों में समय प्रबंधन की आदत मध्यम स्तर की है तथा इस क्षेत्र में व्यक्तिगत भिन्नता भी विद्यमान है। अध्ययन हेतु भौतिक परिस्थितियाँ के आयाम में न्यूनतम प्राप्तांक 7, अधिकतम 12,

माध्य 9.40 तथा मानक विचलन 3.785 प्राप्त हुआ। यह संकेत करता है कि अधिकांश विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए अपेक्षाकृत संतोषजनक भौतिक वातावरण उपलब्ध है, हालांकि इस संदर्भ में भी विद्यार्थियों के बीच अंतर पाया गया। पठन क्षमता में न्यूनतम प्राप्तांक 10, अधिकतम 14, माध्य 13.80 तथा मानक विचलन 2.294 पाया गया। यह अध्ययन आदतों के सभी आयामों में सर्वाधिक माध्य है, जिससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की पठन क्षमता काफी अच्छी है तथा अध्ययन सामग्री को पढ़ने और समझने की क्षमता विकसित है। नोट्स निर्माण में न्यूनतम प्राप्तांक 3, अधिकतम 5, माध्य 3.90 तथा मानक विचलन 3.404 पाया गया। यह अपेक्षाकृत निम्न माध्य यह संकेत करता है कि विद्यार्थियों में व्यवस्थित नोट्स बनाने की आदत का पर्याप्त विकास नहीं हुआ है। अधिगम प्रेरणा के कारक में न्यूनतम प्राप्तांक 8, अधिकतम 12, माध्य 12.80 तथा मानक विचलन 3.872 प्राप्त हुआ। यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति प्रेरणा का स्तर उच्च है और वे सीखने के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। स्मृति सुधार के आयाम में न्यूनतम प्राप्तांक 5, अधिकतम 8, माध्य 7.20 तथा मानक विचलन 4.405 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों द्वारा स्मृति सुधार संबंधी रणनीतियों का उपयोग संतोषजनक स्तर पर किया जाता है, हालांकि मानक विचलन अधिक होने से व्यक्तिगत भिन्नता अधिक दिखाई देती है। परीक्षा में सम्मिलित होने की तैयारी में न्यूनतम प्राप्तांक 9, अधिकतम 17, माध्य 15.80 तथा मानक विचलन 2.052 प्राप्त हुआ। यह उच्च माध्य दर्शाता है कि विद्यार्थियों की परीक्षा तैयारी अच्छी है तथा वे परीक्षा संबंधी व्यवहार में अधिक सजग हैं। स्वास्थ्य के आयाम में न्यूनतम प्राप्तांक 2, अधिकतम 6, माध्य 4.20 तथा मानक विचलन 2.631 पाया गया। यह अपेक्षाकृत निम्न माध्य संकेत करता है कि विद्यार्थियों के स्वास्थ्य संबंधी अध्ययन व्यवहार में सुधार की आवश्यकता है। कुल अध्ययन आदत का न्यूनतम प्राप्तांक 46, अधिकतम 83, माध्य 63.52 तथा मानक विचलन 12.170 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की समग्र अध्ययन आदतें मध्यम से संतोषजनक स्तर की हैं। शैक्षिक उपलब्धि में न्यूनतम प्राप्तांक 52.00, अधिकतम 89.00, माध्य 68.41 तथा मानक विचलन 7.54 प्राप्त हुआ। यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन सामान्यतः संतोषजनक है तथा अधिकांश विद्यार्थी औसत से बेहतर उपलब्धि प्राप्त कर रहे हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें, बुद्धिलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः मध्यम से संतोषजनक स्तर की हैं। अध्ययन आदतों में पठन क्षमता, अधिगम प्रेरणा तथा परीक्षा तैयारी मजबूत क्षेत्र के रूप में उभरे हैं, जबकि नोट्स निर्माण, स्वास्थ्य तथा प्रतीक रूपांतरण क्षमता में सुधार की आवश्यकता है। यह निष्कर्ष इस बात की पुष्टि करता है कि बेहतर अध्ययन आदतें विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती हैं।

तालिका संख्या 02: विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध

क्र. सं.	चर	संख्या	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता स्तर	सार्थकता
1	अध्ययन आदत	500	0.610	0.01	हाँ
2	शैक्षिक उपलब्धि	500			

विश्लेषण एवं व्याख्या:

तालिका संख्या 02 में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस विश्लेषण हेतु कुल 500 विद्यार्थियों के आँकड़ों का उपयोग किया गया। अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त सहसंबंध गुणांक (r) 0.610 पाया गया, जो एक उच्च धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। प्राप्त p-मूल्य 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य पाया गया संबंध केवल संयोगवश नहीं है, बल्कि

वास्तविक एवं महत्वपूर्ण है। चूँकि सहसंबंध गुणांक का मान +0.610 है, अतः यह संकेत करता है कि जैसे-जैसे विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सुधार होता है, वैसे-वैसे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि होती है। दूसरे शब्दों में, जिन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें अधिक व्यवस्थित, अनुशासित तथा प्रभावी हैं, वे शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यह निष्कर्ष इस तथ्य को भी पुष्ट करता है कि अध्ययन आदतें शैक्षिक सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। समय प्रबंधन, नियमित पुनरावृत्ति, एकाग्रता, नोट्स निर्माण तथा परीक्षा की सुव्यवस्थित तैयारी जैसे अध्ययन व्यवहार विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। निष्कर्षतः, तालिका से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि बेहतर अध्ययन आदतें विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

तालिका संख्या-04: लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	पी-मूल्य	सार्थकता स्तर
1	बालक	250	61.84	11.62	3.24	0.01	सार्थक
2	बालिकाएँ	250	65.20	12.48			

विश्लेषण एवं व्याख्या:

तालिका संख्या 03 में लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की तुलना प्रस्तुत की गई है। इस तुलना हेतु बालक एवं बालिकाओं के अध्ययन आदतों के माध्य, मानक विचलन तथा टी-मूल्य का उपयोग किया गया है। तालिका के अनुसार, 250 बालकों का अध्ययन आदतों का माध्य 61.84 तथा मानक विचलन 11.62 पाया गया, जबकि 250 बालिकाओं का अध्ययन आदतों का माध्य 65.20 तथा मानक विचलन 12.48 प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि बालिकाओं का अध्ययन आदतों का औसत स्कोर बालकों की तुलना में अधिक है। माध्य मानों की तुलना से यह संकेत मिलता है कि बालिकाएँ अध्ययन के प्रति अधिक व्यवस्थित, अनुशासित एवं सकारात्मक अध्ययन व्यवहार प्रदर्शित करती हैं। बालिकाओं का उच्च माध्य यह दर्शाता है कि वे समय प्रबंधन, पुनरावृत्ति, नोट्स निर्माण, परीक्षा तैयारी तथा अध्ययन के प्रति नियमितता जैसे पहलुओं में अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी अध्ययन आदतों का पालन करती हैं। दूसरी ओर, बालकों का अपेक्षाकृत निम्न माध्य यह इंगित करता है कि उनकी अध्ययन आदतें बालिकाओं की तुलना में कम संगठित हो सकती हैं। प्राप्त टी-मूल्य 3.24 है, जो 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। इसका अर्थ यह है कि बालक एवं बालिकाओं की अध्ययन आदतों के मध्य पाया गया अंतर केवल संयोगवश नहीं है, बल्कि वास्तविक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। मानक विचलन के आधार पर देखा जाए तो बालकों (11.62) और बालिकाओं (12.48) दोनों समूहों में अध्ययन आदतों में कुछ व्यक्तिगत भिन्नताएँ विद्यमान हैं, किन्तु ये भिन्नताएँ अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष को प्रभावित नहीं करतीं। निष्कर्षतः, तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जाता है। बालिकाओं की अध्ययन आदतें बालकों की अपेक्षा अधिक प्रभावी एवं व्यवस्थित हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि

तालिका संख्या 04: लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	पी-मूल्य	सार्थकता स्तर
1	बालक	250	66.84	7.26	3.42	0.01	0.01 स्तर पर सार्थक
2	बालिकाएँ	250	69.98	7.68			

विश्लेषण एवं व्याख्या:

तालिका संख्या 04 में लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना प्रस्तुत की गई है। तालिका के अनुसार, बालकों की संख्या 250 तथा बालिकाओं की संख्या भी 250 है। बालकों का शैक्षिक उपलब्धि का माध्य 66.84 तथा मानक विचलन 7.26 पाया गया, जबकि बालिकाओं का माध्य 69.98 तथा मानक विचलन 7.68 प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का औसत बालकों की अपेक्षा अधिक है। दोनों समूहों के मध्य अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्राप्त टी-मूल्य 3.42 पाया गया, जो 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। यह दर्शाता है कि बालकों और बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य पाया गया अंतर केवल संयोगवश नहीं है, बल्कि वास्तविक एवं सार्थक अंतर है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर विद्यमान है। चूंकि बालिकाओं का माध्य अंक बालकों की तुलना में अधिक पाया गया है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि बालकों की अपेक्षा बेहतर है। इसका संभावित कारण बालिकाओं में अधिक अनुशासन, अध्ययन के प्रति गंभीरता, नियमितता तथा शैक्षणिक उत्तरदायित्व की भावना हो सकती है। अतः अध्ययन के इस उद्देश्य के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि लिंग शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।

अध्ययन की विवेचना एवं निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, बुद्धिलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का परीक्षण करना तथा इन चरों के प्रभाव को समझना था। प्रस्तुत तालिकाओं के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। वर्णनात्मक विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की समग्र अध्ययन आदतें मध्यम से संतोषजनक स्तर की हैं। अध्ययन आदतों के विभिन्न आयामों में पठन क्षमता, अधिगम प्रेरणा तथा परीक्षा तैयारी जैसे क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक विकसित पाए गए, जबकि समय प्रबंधन, नोट्स निर्माण तथा स्वास्थ्य संबंधी आदतों में अपेक्षाकृत कमजोरी दृष्टिगोचर हुई। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों में कुछ सकारात्मक अध्ययन व्यवहार विकसित हैं, किन्तु अभी भी कुछ क्षेत्रों में सुधार की पर्याप्त आवश्यकता है। यह निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों के अनुरूप है, जिनमें यह पाया गया कि प्रभावी अध्ययन आदतें शैक्षणिक सफलता का एक महत्वपूर्ण आधार होती हैं।

बुद्धिलब्धि के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता सामान्य से संतोषजनक स्तर की है। तर्क क्षमता एवं वर्गीकरण क्षमता जैसे आयामों में विद्यार्थियों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया, जबकि प्रतीक रूपांतरण क्षमता अपेक्षाकृत कमजोर रही। यह तथ्य इंगित करता है कि विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं में विविधता विद्यमान है, जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है। तथापि, अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि केवल बुद्धिलब्धि ही नहीं, बल्कि अध्ययन आदतें भी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला अत्यंत महत्वपूर्ण कारक हैं।

अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध विश्लेषण में धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ, जो 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। यह निष्कर्ष इस तथ्य की पुष्टि करता है कि बेहतर अध्ययन आदतों वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी बेहतर होती है। अर्थात्, जैसे-जैसे विद्यार्थियों में समय प्रबंधन, नियमित पुनरावृत्ति, प्रभावी नोट्स निर्माण, एकाग्रता तथा परीक्षा तैयारी जैसी अध्ययन आदतों का विकास होता है, वैसे-वैसे उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में वृद्धि होती है। यह निष्कर्ष इस विचार को सुदृढ़ करता है कि

अध्ययन आदतें शैक्षणिक सफलता की दिशा में एक प्रभावी व्यवहारगत साधन हैं। लिंग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि की तुलना से यह पाया गया कि बालिकाओं का शैक्षणिक प्रदर्शन बालकों की अपेक्षा बेहतर है तथा यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इस निष्कर्ष से यह संकेत मिलता है कि बालिकाएँ अध्ययन के प्रति अधिक अनुशासित, नियमित एवं गंभीर दृष्टिकोण अपनाती हैं, जिसके कारण उनकी शैक्षणिक उपलब्धि अधिक पाई गई। यह भी संभव है कि बालिकाओं में आत्म-अनुशासन, उत्तरदायित्व की भावना तथा शैक्षणिक प्रतिबद्धता अपेक्षाकृत अधिक विकसित हो, जो उनके बेहतर प्रदर्शन का कारण बनती है। वर्तमान अध्ययन दरभंगा जिले के सामाजिक-शैक्षिक संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहाँ सामाजिक-आर्थिक विविधता, ग्रामीण-शहरी असमानताएँ तथा शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता में अंतर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को प्रभावित कर सकते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यदि विद्यार्थियों को अनुकूल अध्ययन वातावरण, उचित शिक्षक मार्गदर्शन, प्रभावी अध्ययन रणनीतियाँ तथा अभिभावकीय सहयोग प्रदान किया जाए, तो उनकी अध्ययन आदतों में सुधार लाकर शैक्षिक उपलब्धि को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया जा सकता है।

अतः समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें, बुद्धिलब्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः संतोषजनक स्तर पर हैं, किन्तु अध्ययन आदतों के कुछ आयामों में सुधार की आवश्यकता है। अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक धनात्मक संबंध यह स्पष्ट करता है कि अध्ययन आदतें शैक्षणिक सफलता को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख निर्धारक हैं। साथ ही, लिंग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में पाए गए अंतर से यह भी स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत एवं सामाजिक कारक विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं। इसलिए माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर विद्यार्थियों में प्रभावी अध्ययन आदतों के विकास हेतु विशेष प्रयास किए जाने चाहिए, ताकि उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के साथ-साथ शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में भी सुधार लाया जा सके।

संदर्भ सूची

- अदेओये, एम. ए., पैरामोले, ओ. सी., जोलायोये, जे. डी., एवं जिन्निल, ए. ओ. (2023). माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों के विकास तथा शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ावा देने हेतु आकर्षक रणनीतियों का कार्यान्वयन। *सोशिया: जर्नल इल्मु-इल्मु सोशल*, 20(2), 154–165. <https://doi.org/10.21831/socia.v20i2.65956>
- अकुएज़ुइलो, जे. ए., एवं एजेंटी, एफ. सी. (2023). अनाम्ब्रा राज्य के माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के पूर्वानुमानक के रूप में अध्ययन आदतें एवं अधिगम शैलियाँ। *जर्नल ऑफ गाइडेंस एंड काउंसलिंग स्टडीज़*, 7(1), 45–59.
- अली, एम. आई., एवं फाज़, एम. (2017). विद्यालय के प्रकार एवं लिंग के संदर्भ में उच्च माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के मापक के रूप में अध्ययन आदतें। *इंटरनेशनल एजुकेशन एंड रिसर्च जर्नल*, 3(4), 85–87.
- कोस्टा, ए., मोरेरा, डी., कासानोवा, जे., अज़ेवेडो, ए., गोंकाल्वेस, ए., ओलिवेरा, आई., एवं डायस, पी. सी. (2024). मध्य एवं माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में शैक्षणिक उपलब्धि के निर्धारक: एक व्यवस्थित समीक्षा। *सोशल साइकोलॉजी ऑफ एजुकेशन*, 27, 3533–3572. <https://doi.org/10.1007/s11218-024-09941-z>
- क्रेडे, एम., एवं कुन्सेल, एन. आर. (2008). अध्ययन आदतें, कौशल एवं अभिवृत्तियाँ: महाविद्यालयीन शैक्षणिक प्रदर्शन को समर्थन देने वाला तीसरा स्तंभ। *पर्सपेक्टिव्स ऑन साइकोलॉजिकल साइंस*, 3(6), 425–453. <https://doi.org/10.1111/j.1745-6924.2008.00089.x>

- गाहिर, एस., साहू, एस., एवं साहू, एस. (2022). माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध। *कॉन्टेम्परेरी रिसर्च इन एजुकेशन एंड इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग*, 4(1), 1–8. <https://doi.org/10.55214/26410230.v4i1.187>
- गेटिंगर, एम, एवं सीबर्ट, जे. के. (2002). शैक्षणिक दक्षता में अध्ययन कौशलों का योगदान। *स्कूल साइकोलॉजी रिव्यू*, 31(3), 350–365. <https://doi.org/10.1080/02796015.2002.12086160>
- कुमार, डी., एवं यादव, एम. सी. (2025). माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं अध्ययन आदतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लिटरेसी एंड एजुकेशन*, 5(2), 458–461. <https://doi.org/10.22271/27891607.2025.v5.i2f.363>
- मेंडेज़ाबल, एम. जे. एन. (2013). अध्ययन आदतें एवं अभिवृत्तियाँ: शैक्षणिक सफलता का मार्ग। *ओपन साइंस रिपॉजिटरी एजुकेशन*, 2013(1), 1–14. <https://doi.org/10.7392/Education.70081928>
- मिश्रा, एस. (2022). भारत में माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें एवं अभिवृत्तियाँ। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल लर्निंग*, 3(1), 1–10. <https://doi.org/10.47134/ijsl.v3i1.66>
- रज़िया, बी. (2015). माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं लिंग के संदर्भ में। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एंड मैनेजमेंट*, 2(1), 68–73. <https://doi.org/10.3126/ijssm.v2i1.11815>
- शर्मा, एम., एवं सिंह, एम. (2021). माध्यमिक विद्यालयी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के संदर्भ में शैक्षणिक उपलब्धि। *साइकोलॉजी एंड एजुकेशन जर्नल*, 58(2), 1813–1819. <https://doi.org/10.17762/pae.v58i2.3548>